

जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

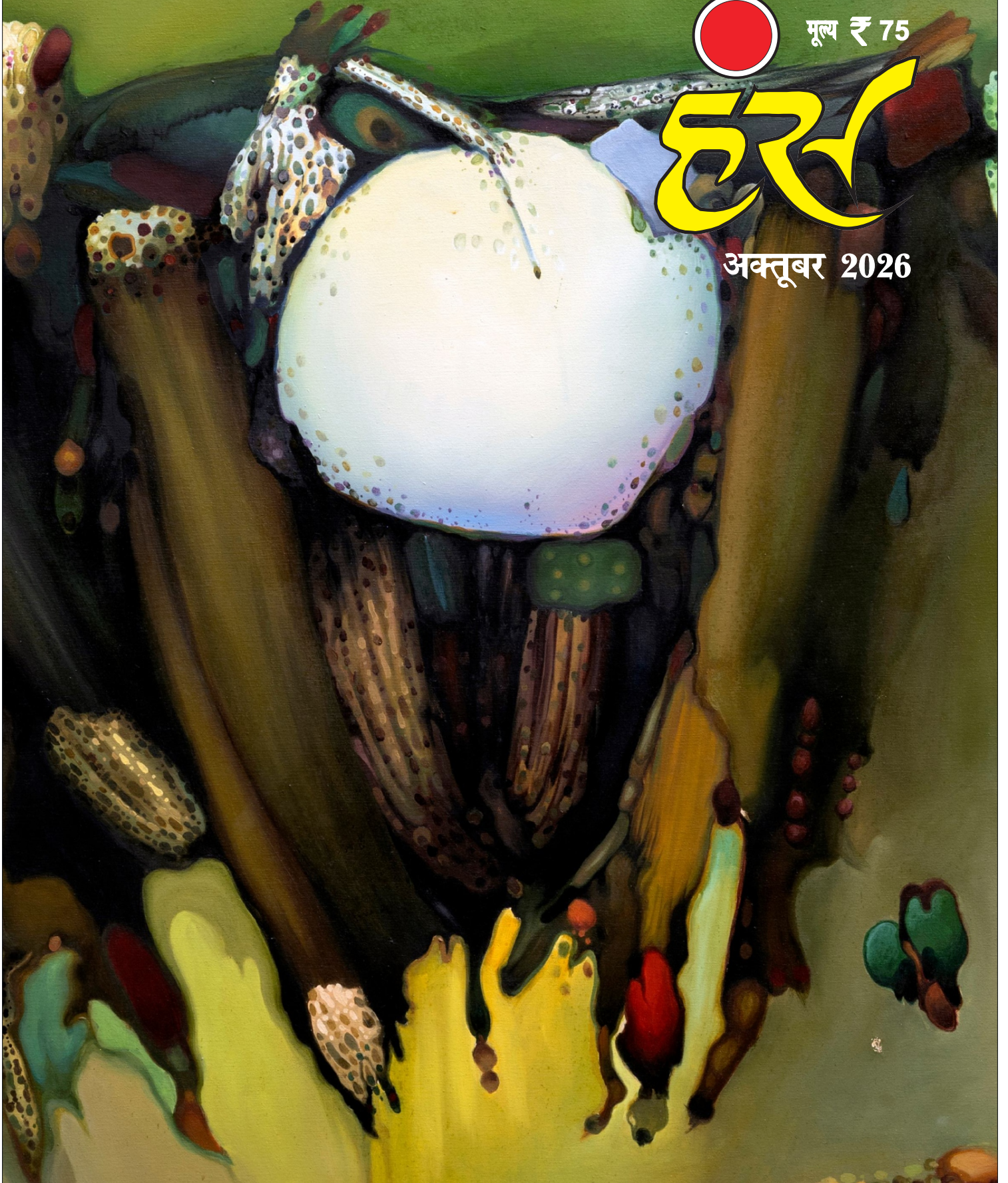
ISSN 2454-4450



मूल्य ₹ 75

हर

अक्टूबर 2026



संपादक
संजय सहाय

प्रबंध निदेशक
रचना यादव

व्यवस्थापक/सह-संपादन सहयोग
वीना उनीयाल

सहायक संपादक
शोभा अक्षर
संपादन सहयोग
माने मकर्तव्यान

प्रसार एवं लेखा प्रबंधक
हारिस महमूद

शब्द-संयोजन एवं रूपांकन
प्रेमचंद गौतम

सोशल मीडिया प्रबंधक
नाज़रीन

ग्राफिक्स
साद अहमद

कार्यालय सहायक
किशन कुमार, दुर्गा प्रसाद

मुख्य प्रतिनिधि (उ.प्र.)
राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल

कार्यालय

अक्षर प्रकाशन प्रा. लि.

4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-2

व्हाट्सएप : 9717239112, 9560685114

दूरभाष : 011-41050047

ईमेल : editorhans@gmail.com

वेबसाइट : www.hanshindimagazine.in

मूल्य : 75 रुपए प्रति

वार्षिक रजिस्टर्ड : 1250 रुपए (व्यक्तिगत)

संस्था/पुस्तकालय : 1500 रुपए (संस्थागत)

वार्षिक पीडीएफ : 600 रुपए (व्यक्तिगत)

पीडीएफ : 700 रुपए (संस्थागत)

विदेशों में : 80 डॉलर

सारे भुगतान मनीऑर्डर/चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा

अक्षर प्रकाशन प्रा. लि. (Akshar Prakashan Pvt. Ltd.) के नाम से किए जाएं.

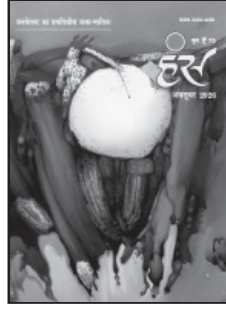
हंस/अक्षर प्रकाशन प्रा.लि. से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे. अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है. हंस में प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखकों के अपने हैं. उनसे हंस की सहमति अनिवार्य नहीं है. साथ ही उनके मौलिक या अप्रकाशित होने का उत्तरदायित्व संपादक और प्रकाशक का नहीं है बल्कि यह दायित्व रचनाकार का है.

प्रकाशक/मुद्रक : रचना यादव खन्ना द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा.लि., 4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित एवं चार दिशाएं, जी-39/40, सेक्टर-3, नोएडा- 201301 (उ.प्र.) से मुद्रित. संपादक-संजय सहाय.

अक्टूबर, 2026

मूल संस्थापक : प्रेमचंद : 1930

पुनर्संस्थापक : राजेन्द्र यादव : 1986



आवरण : अफ़ज़ल पटान

पूर्णांक-480 वर्ष : 41 अंक : 3 अक्टूबर 2026



जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

इस अंक में

मेरी-तेरी उसकी बात

4. रोड़ए ज़ार-ज़ार क्यूं? : राजेन्द्र यादव
(‘हंस’, दिसंबर 2002)

अपना मोर्चा

10. पत्र

मुड़-मुड़ के देख

15. इमलियां : प्रेमकुमार मणि
(‘हंस’, जनवरी 1994)

कहानियां

20. लाश के वास्ते: प्रमोद द्विवेदी
28. वारिश आज भी उसका नाम लेती है:
पंकज सुबीर
38. मधुमास: द्विवेकल रक्षिता
56. मक्खी: योकोमिस्तु रीडिचि(जापानी कहानी)
(अनुवाद: अनुश्री)

युवा कथा सम्मान से पुरस्कृत

50. नीले हाथियों का देश: मुकुल शर्मा

कविताएं

54. केतन यादव, राजेश कमल
55. अपूर्वा श्रीवास्तव

आधुनिक पाश्चात्य दर्शन और साहित्य

59. आधुनिक दर्शन की विकास यात्रा-9 :
अशोक कुमार

लघुकथा

19. अधूरी कविता : प्रमोद भंडारी ‘पार्थ’

हस्तक्षेप

65. ‘आधा गाँव’ और हिंदी-उर्दू विवाद:
नमिता सिंह
69. फिर विवाद के घेरे में ‘आधा गाँव’:
मोहन गुप्त

उपन्यास अंश-8

71. सोमालिया का यातनाघर :
राजेन्द्र चन्द्रकान्त राय

गज़ल

64. अच्युतम यादव 70. भरत तिवारी

परख

74. दास्तान-ए-गुरु दत्त: जवरीमल्ल पारख
78. टूटती सरहदें और जुड़ती संवेदनाओं
की कथा: उषा राय
81. परीकथा की लय में दैनंदिन यथार्थ: अनामिका
84. अकेलेपन की त्रासदी से जूझते....: गीताश्री

दूर दिशा से

87. हान कांग* : हिंसा के विरोध में: रेखा सेठी

साहित्यनामा

90. बिन देखे परतीत न आवै, कहे न को पतियाना:
साधना अग्रवाल

शब्दवेधी/शब्दभेदी

95. साहित्य में श्लील-अश्लीलता की सीमा:
तसलीमा नसरीन

रेतघड़ी

- 98



रोइए ज़ार-ज़ार क्यूं?*

राजेन्द्र यादव

कवि उदय प्रताप का एक शेर है—

पुरानी किशती को पार ले कर फ़क़त हमारा हुनर गया है
नए ख़िवय्ये कहीं न समझें नदी का पानी उतर गया है

यह शेर एक सफल और अनुभवी व्यक्ति की आश्वस्त-मानसिकता को ही व्यक्त नहीं करता, बल्कि ‘नए ख़िवय्यों’ की क्षमता को धिक्कारता भी है। जिस तरह ‘पुराना युग और पुराने लोग महान क्षमता वाले दिग्गज थे’ की उक्तियां वेदों से लेकर आज छोटे-बड़े हर भारतीय परिवार का स्थाई तकिया कलाम हैं, उसी तरह ‘जितना हमने घी खाया है उतना तुम्हें पानी भी नसीब नहीं है’ की शेखियां भी घर-घर की टेक रही हैं। नई और पुरानी पीढ़ी की सारी दूरियों और खाइयों के पार पुराने की महानता दोनों ही पक्षों द्वारा लगभग निर्विवाद रूप से स्वीकृत हैं। “बड़े-बूढ़ों का सम्मान करो, वे कभी ग़लत नहीं होते” का वाक्य अपनी व्याप्ति में इतिहास और संस्कृति की पुरातनता और सर्वश्रेष्ठता की घोषणा तक जाता है। चाहें तो आप ‘पुरातन’ का अनुवाद ‘सनातन’ भी कर लें। संस्कृति के क्षेत्र में इस ‘सनातन की खोज’ और स्थापना के लिए अनेक विद्वानों ने एड़ी-चोटी का पसीना बहाया है। विश्व का कौन-सा ज्ञान है जो हमारी संस्कृति में पहले से मौजूद नहीं है। गणित से लेकर गणिका-शास्त्र तक। पुष्पक से लेकर प्रक्षेपास्त्रों तक सभी कुछ तो हमारे पुरखों के पास था, और परम विकसित था—वाह! वाह रे हम...

भारतीय विश्वास है कि हमारी सारी संस्कृति-यात्रा सतयुग से कलियुग तक की पतन-गाथा है। यह हमारी आदिम-स्मृति है और साइकी या संस्कारों का हिस्सा है। उधर पश्चिम कहता है कि मनुष्य पहले बंदर जैसा कोई प्राणी था और लाखों वर्षों में विकसित होकर आज तक आया है, हम मानव-जाति के सर्वश्रेष्ठ युग में रह रहे हैं। पश्चिम के अधीनस्थ संपर्क में आने के बाद

लगभग हमारी उन्नीसवीं और बीसवीं दो शताब्दियां इन्हीं दो नावों में पांव टिकाने की कश्मकश में गुज़री हैं। गुलामों के आत्मविश्वास को ज़िंदा रखने के लिए उनकी पूर्व महानता और गुज़री स्वतंत्रता को बनाए रखना ज़रूरी है। अंग्रेज़ शासकों की रणनीति भी यही थी कि प्राचीनता के गुणगान द्वारा प्रजा के मनोबल को बनाए रखें, ताकि वर्तमान गुलामी पर बहुत ध्यान न दिया जा सके। इस प्रक्रिया में उन्होंने प्राचीन महानता का जो ढांचा तैयार किया उसे ही आज की भाषा में ‘पूर्वी-गढ़त’ या ‘ओरियंटल कंस्ट्रक्ट’ का नाम दिया गया। सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महानता के इस इंद्रजाल ने हमारे भौतिक शोषण में कितनी मदद की इस पर बहुत कुछ लिखा गया।

आधी शताब्दी पहले अंग्रेज़ चले गए, मगर राष्ट्रीय गौरव के नाम पर प्राचीन महानता का जो झुनझुना हमें पकड़ा गए वह आज भी हमारी जान का बवाल बना हुआ है। सारी सुविधाएं, जीवन-पद्धति और संसाधन सभी कुछ पश्चिम का है और हम वहां हैं जहां से लौटना संभव नहीं है, मगर मानसिक रूप से हम आज भी हजारों साल पहले की महानता में कैद हैं। अंग्रेज़ों ने खोजों और प्रमाणों के आधार पर हमारी जिस महानता का अनुसंधान किया था, हम उसी की भव्यता को अपने नए-नए रूपाकारों से गढ़ते चले जा रहे हैं। जो आविष्कार-प्रतिभा अपने देशकाल की समस्याओं से जूझने के लिए नई यांत्रिकी, वैज्ञानिकता के स्रोत और सोच की दिशा में लगनी चाहिए थी, वह पुराने के पुनर्गठन में जोत दी गई। उधर सारा युवा वर्ग पश्चिम के बने बनाए माल की भारतीय नकलें तैयार करने में लगा है। हमारे तथाकथित वैज्ञानिक आविष्कर्ता अमेरिका के हिसाब से और उनके ही हित में प्रतिभा का कमाल दिखा रहे हैं। देश वहां कहीं नहीं है।

खैर नए-पुराने का यह द्वंद्व हमेशा ही चलता रहा है। वृद्ध